राजश्री शिर्के

अकादेमी पुरस्कार : कथक

15 नवम्बर 1951 को मुम्बई में जन्मी, श्रीमती राजश्री शिर्के ने अपनी प्रारंभिक शिक्षा डी.एस. सताम्कर के अधीन कथक में प्राप्त की, और बाद में मधुरिता सारंग से इस कला में प्रशिक्षण प्राप्त किया। आपने नालंदा नृत्य कला महाविद्यालय, मुम्बई से भरतनाट्यम में निष्णात की उपाधि प्राप्त है। वहां वह श्रीमती कनक रेले की शिष्या रहीं. आपने पी. एन. राजलक्ष्मी कादिरवेल्लु सौंदराजन, तथा थांगमणि नागराजन से भी भरतनाट्यम का प्रशिक्षण प्राप्त किया है। आपको श्रीमती नाथीबाई दामोदर ठाकरसी महिला विश्वविद्यालय, मुम्बई से हिन्दी साहित्य में निष्णात की उपाधि प्राप्त हैं।

एक प्रतिष्ठित कथक नृत्यांगना के रूप में, श्रीमती राजश्री शिर्के ने अपने हुनर का उपयोग शिक्षण और नृत्य निर्देशन के क्षेत्र में भी किया, और अपने अर्जित कलात्मक संसाधनों के माध्यम से अभिव्यक्ति के नए आयामों की खोज की। आप विभिन्न प्रतिष्ठित महोत्सवों में कथक का प्रदर्शन कर चुकी हैं, जैसे दिल्ली में कथक महोत्सव, मुम्बई में हरिदास सम्मेलन, चेन्नई में नाट्य कला सम्मेलन, लखनऊ में विरासत महोत्सव, और श्रुति मंडल जयपुर, कृष्ण गान सभा चेन्नई, तथा बनारस हिन्दु विश्वविद्यालय के संरक्षण में आयोजित कार्यक्रम. 1980 में आपने लाय की स्थापना की, वहां नृत्य का प्रशिक्षण देने के अतिरिक्त, श्रीमती शिर्के 2004 से मुम्बई विश्वविद्यालय में रंगमंच कला अकादेमी में कक्षाएं लेती हैं। आपने कथात्मक संरचना के साथ अनेक नृत्य प्रस्तुतियों का निर्देशन किया है, जैसे रावण मंदोदरी संवाद(2006), गर्व हरण(2007), 1857– एक उठाव(2009), घेयी है छंद! मकरंद!! (2010), होरी खेला(2011), रस यात्रा(2012), खता (2012), और संगीत कान्होपत्र (2012). इन नाटकों में से कुछ नाटक कालजयी और आधुनिक भारतीय साहित्य में विविध स्रोतों पर आधारित हैं, जबकि अन्य महाराष्ट्र की प्रदर्शन परंपराओं के आधार पर रचे गए हैं. श्रीमती शिर्के ने निर्देशक चेतन दातार के साथ नाट्य प्रस्तुतियों में भी सहयोग दिया है, जैसे माता हिडिम्बा(2002) और हरवलेले प्रतिबिम्ब (2004)। आपने मराठी लोक नाट्य कला, साहित्य और कथक के संबंध, तथा शास्त्रीय नृत्य में नृत्य निर्देशन पर केन्द्रित अनेक सम्मेलनों का आयोजन किया है। आप संस्कृति विभाग, भारत सरकार के एक वरिष्ठ अनुसंधान अध्येतावृत्ति की मदद से उत्तर भारत के मंदिरों में कथा प्रदर्शन पर शोध कर रही हैं।

अन्य सम्मानों के अतिरिक्त, श्रीमती शिर्के को प्रायोगिक रंगशाला एवं नृत्य–निर्देशन में उनके कार्य के लिए मराठी साहित्य पुरस्कार से दो बार (2003 एवं 2006) सम्मानित होने का गौरव प्राप्त है।

श्रीमती शिर्के को कथक में योगदान के लिए संगीत नाटक अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित किया जाता है।